ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा द्वारा रचित उपन्यास 'चंदन-चाँदनी' में

(नारी जागृति का स्वर)

फारूक अहमद

पी.एच.डी शोधार्थी

कश्मीर विश्वविद्यालय,

हज़रतबल, श्रीनगर

किसी भी समाज में साहित्य को लोकादर्पण की दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि साहित्य ही एक मात्र ऐसा साधन है |जिसके द्वारा समाज के सभी पक्षों का पूर्णत: निष्पक्षता के साथ चित्रण होता है | इस से हम सभी भलिभांति परिचित हैं कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है जब-जब समाज की प्रिस्थितियों में परिवर्तन होता है वैसे-वैसे साहित्य में लेखन कार्य एवं साहित्यकारों की लेखन दृष्टि भी परिवर्तित होती रही | स्त्री का चित्रण साहित्य में प्रारंभ से होता चला आया है परन्तु तब स्त्री के चित्रण का दायरा संकुचित ही रहा है उस समय स्त्री मुख्य रूप से देवी, प्रेमिका, तथा माँ के रूप में ही चित्रित होती रही थी परन्तु समय परिवर्तन के साथ ही साहित्य में नारी चित्रण के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होने लगा| हिंदी साहित्य में भारतेंदु काल के पूर्व नारी की हीन तथा दयनीय स्थिति को ही उद्घाटित किया जाता था| उस को कोई अधिकार प्रधान नहीं थे तथा उसे मात्र पराधीनता की ही मूर्त समझा जाता था जिसका अस्तित्त्व मात्र घर की चारदीवारी तक ही सीमित था| समाज में उसको विशेष आरक्षण दिलाने का कार्य नवजागरण काल के समाज सुदारकों ने किया| उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री संबंधी कुप्रथाओं का विरोध कर उन्हें समाज में ऊपर उठाने का भरसक प्रयास किया | इसके लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा के द्वारा नारी चेतना का स्वर अंकुरित्त किया| जिसके फलस्वरूप देश में नारी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ तथा नारी अपने अधिकारों और अस्तित्त्व के प्रति जागरूक होना

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

प्रारंभ हुई| उनकी इस उभरती स्थिति का चित्रण समय-समय पर आधुनिक उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से करने का प्रयास किया| 'नदी के द्वीप' (अज्ञेय) की रेखा का "सूनापन आधुनिक युग की देन है | उसका साहस आधुनिक नारी चेतना का परिणाम है |"1 वैसे तो साहित्य की सभी विधाओं में महिलाओं ने अपनी सहभागिता दी| अगर हम बीसवी सदी के आरंभिक काल की बात करे तो इस काल में हिंदी के उपन्यास और कहानियाँ एक नई चीज हैं |" चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का नाम उस कोटि में आता है जिन्होंने स्त्री चेतना को अपनी रचनाओं का विषय बनाया | हिन्दी कथा साहित्य में चन्द्रकिरण सौनरेक्सा ने अपने 'चंदन चाँदनी' जो की सामाजिक उपन्यास है में गरिमा नामक पात्र के माध्यम से नारी जागृति की आवाज़ को बुलंद किया| उन बिंदुओं की झलक निम्नलिखित रूप से देखने को मिलती है:-

1. पढ़ने की शौकीन:-

गरिमा अपने माता–पिता की इच्छा के विरुद्ध पढ़ना चाहती है क्योंकि उसे पढ़ने का शौक है किन्तु जब बारहवीं के उपरान्त माता-पिता उस के लिए लड़के की तलाश में लग जाते हैं और सोचते हैं की अगर लड़की अधिक पढ़ गई तो विवाह के लिए लड़का मिलना भी कठिन हो जाएगा | जब गरिमा को लड़के वाले देखने आते हैं तो वे गरिमा को काले रंग की होने के कारण शोटी बहन प्रतिमा को पसंद करते हैं तब गरिमा पिता से पूरे स्वाभिमान से कहती है कि, "मैं तो सच मे ही बी.ए. करने से पहले इस झंझट मे नहीं फसना चाहती थी | आपके डर से नहीं करती थी | नहीं तो मेरा मन विवाह करने को तनिक भी तैयार नहीं |"3 इस उक्ति से स्पष्ट होता है कि गरिमा आगे पढ़ने की इच्छुकहै और समाज के विरुद्ध जाकर पढ़ती भी है और नौकरी भी करती है |

2. सामाजिक रीती-रिवाजों का विरोध:-

गरिमा समाज में प्रचलित रीती-रिवाज का विरोध करते हुए दिखाई देती है वह समाज के विरुद्ध जाकर राज से प्रेम विवाह करती है भले ही उसे मायके और सुसराल में उपेक्षा का शिकार होना पड़ा परन्तु वो इसके बारे में नहीं सोचती | " अरे अम्मा तुम्हारे आसरे ही क्या वे लोग बैठे थे | अपनी सहेलियों के साथ दिल्ली गई | वहीं अदालत में ब्याह हुआ.....?4फिर भी गरिमा शादी के उपरांत ससुराल में भी पाखण्डों, अंध-विश्वासों तथा रिवाज़ों का विरोध करने के लिए तत्पर रहती है |

3. पर्दे का विरोध:-

Copyright © 2020 Authors

शादी के उपरांत गरिमा ने ससुराल में कुछ समय तक तो सबकी प्रसन्नता के लिए घूंघट करना स्वीकार किया लेकिन बैशाख की गर्मी में चौबीस घण्टे मुंह को ढके रहना उसके बर्दाश्त से बाहर था क्योंकि घर में ससुर मात्र धोती में घूम सकते हैं लेकिन बहुएं घूंघट नहीं हटा सकती भले ही कितनी ही गर्मी क्यों न हो | यह सब वह अनुचित समझती है | इसीलिए एक रात वह अपने पति को कह देती है कि, " मैं अब घूंघट नहीं करुँगी |"5 तब पति ने कहा की इस बात से पिता जी गुस्सा हो जाएंगे तो गरिमा कहती है कि "मेरे वश का घूंघट करना नहीं है इतने दिन तो तुम्हारी प्रसन्नता के लिये कर लिया |"6

4. नारी अधिकारों के प्रति जागरूक :-

गरिमा एक पढ़ी-लिखी स्त्री है तथा वह स्त्री के अस्तित्त्व तथा सरकार द्वारा दिये गये अधिकारों को अच्छे से पहचानती है तथा वह अपने पति से बिना किसी भह से कह देती है,"बड़ों का सम्मान करना मुझे आता है | पर बाबु जी तो यह समझना ही नहीं चाहते हैं की समय कितना बदल गया है | नारी भी जीने की सुविधा चाहती है |"7

5.पति का विरोध करने वाली:-

जब राज उसे घूंघट के लिए कहता है और समझाने का प्रयास करता है कि कुछ समय तक तो पर्दा कर लेना चाहिए तो गरिमा उसे स्त्री की स्वछंदता का अनुभव करवाती है कि ऐसी नारियां भी अब भारत में यत्र-तत्र सर्वत्र सुलभ हैं जो परचरचा की अपेक्षा देश और समाज चर्चा में रस ही नहीं सक्रिय भाग भी लेती हैं .....में उन्हीं में अपनी मिनती करना चाहूँगी |"8

6. नारी की सामाजिक और पारिवारिक स्थिति में सुधार करने की अभिलाषी:-

ससुराल में गरिमा जब स्त्री की स्थिति देखती है कि घर की बहुओं को किसी भी चीज की स्वत्रंता नहीं है न खाने की, न पीने की, न कहीं आने जाने की तथा चारदीवारी में ही कैद कर के रखा जाता है तो वह शोटी देवरानी को उसका साथ देने के लिए कहती है और घूंघट न करने का सुझाव देती है तो ललिता यह कह कर मना कर देती है कि तुम कर सकती हो क्योंकि तुम जीजी पढ़ी-लिखी हो | हम तो अनपढ़ हैं अगर हमने कोई गलती की तो यह हमें तुरंत मायके भेज देंगे तो गरिमा उसे कहती है कि, "तू क्यों नहीं पढ़ लेती ?9 ललिता जब बीमार होती है तथा प्रसव पीड़ा के कारण डॉक्टर न बुलाकर दाई को बुलाया जाता है परन्तु शिशु पैदा होते ही

 Copyright © 2020 Authors

मर जाता है तब गरिमा ललिता को आगे पढ़ने और अपनी स्थिति सुधारने के लिए सिलाई-कढ़ाई के स्कूल में नाम लिखवाने के लिए प्रेरित करती है ताकि वह भी समाज में अपना स्थान बना सके | गरिमा की बातों से प्रेरित होकर ललिता मान जाती है "अच्छा जीजी, जो होगा देखा जायेगा | इस बार मैं भी स्कूल जा कर ही दम लूँगी |"10

7. नारी प्रतिष्ठा के प्रति सजग :-

जब ससुराल में गरीबी जैसे हालात हो जाते हैं तथा घर में बच्चों के दूध के लिए एक पैसा नहीं होता उस समय राज को नाटक में कार्य के लिए लोग चाहिए | उस समय गरिमा उसे स्टेज पर अभिनय का कार्य देने को बोलती है | लेकिन जब वह उसे ऐसा करने से मन कर देता है कि "जो बाबा जी तुझे अध्यापिका बनाना नहीं पसंद करते, वह भला स्टेज पर अन्य देंगे ?11 तब गरिमा अपने स्वाभिमान पर प्रहार समझती है और अपनी प्रतिष्ठाको बरकरार रखने के लिए कहती है कि, "मेरा विवाह तुम्हारे साथ हुआ है मुझे तो सिर्फ तुम्हारी हामी चाहिये |"12

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त बिन्दुओं से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि चन्द्रकिरण ने अपनी मुख्य पात्र गरिमा द्वारा उपन्यास के अन्य पात्रों के भीतर नवीन चेतना का संचार किया है जिससे कि उपन्यास की सभी नारी पात्र अपने अधिकारों, स्त्री अस्मिता, स्वतंत्रता और मन-प्रतिष्ठा के प्रति सजग होने को आतुर हैं |

सहायक एवं संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.हिंदी उपन्यास ,डॉ.सुषमा धवन, पृo – 249

2.हिंदी साहित्य की भूमिका –निबंध उपसंहार, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृo – 124

3. चंदन–चाँदनी, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, पृo – 20

4. वही पृo – 83

5. वही पृo – 91

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

6. वही पृo – 91

7. वही पृo – 92

8.वही पृo – 92

9. वही पृo – 95

11.वही पृo – 128

11. वही पृo – 104

12. वही पृo – 104

Copyright © 2020 Authors